प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 24: शिष्यत्व संबंधपरक है (10d)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **प्रेरितों के काम 20:24**
24 पर मैं अपने जीवन को न तो किसी मूल्य का मानता हूँ और न ही अपने लिए कीमती मानता हूँ,
काश मैं अपना कोर्स और प्रभु यीशु से प्राप्त सेवा पूरी कर सकूं,
ईश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने के लिए।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **प्रेरितों के काम 20**
लिंक: https://www.biblegateway.com/passage/?search=Acts%2020&version=ESV

चरण 4*:* व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:

एक."प्रेरणा" पर यह चर्चा अपने शिष्य को प्रेरित करने के चार तरीकों में विभाजित है।

दो. **दिशा**: अपने जीवन में दिशा खोजने का आपका दृढ़ संकल्प दूसरों को प्रेरित करेगा।

*तीन.***दृष्टि**: शिष्यत्व प्रशिक्षण के माध्यम से परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए अपनी स्पष्ट दृष्टि होना आवश्यक है। लेकिन फिर उस दृष्टि को साझा करें ताकि आपका प्रशिक्षु अपनी दृष्टि विकसित कर सके।

*चार.***आत्मविश्वास**: अपने शिष्य को मसीह यीशु में अपना सच्चा विश्वास खोजने में मदद करें।

पाँच. **तात्कालिकता**: फिलिप्स लिखते हैं कि "दूसरों के प्रति करुणा और मसीह की निकट भविष्य की वापसी का ज्ञान तात्कालिकता की मांग करता है"। हमें नहीं पता कि मसीह कब लौटेंगे।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 10d लेखक – कीथ फिलिप्स के अनुसार:

प्रेरणा

प्रेरणा वह प्रेरक इच्छा है जो हमें हमारे उद्देश्य की ओर ले जाती है। प्रेरणा आपके शिष्य को परमेश्वर का व्यक्ति बनने और प्रभावी तथा आनंदमय सेवा करने के लिए प्रेरित करती है। जब मुझसे हाल ही में एक स्टाफ रिट्रीट में शिष्यत्व पर एक सत्र का नेतृत्व करने को कहा गया, तो मैं अपने सहकर्मियों को बोर करने के डर से हिचकिचाया। मैं शिष्यत्व जीता हूँ, सांस लेता हूँ और खाता हूँ और मानता था कि हमारा पूरा स्टाफ समान रूप से स्व-प्रेरित है। लेकिन जब मैंने उन्हें चुनौती दी, तो मैं प्रतिक्रिया से चकित रह गया। एक के बाद एक व्यक्ति मुझे बताते रहे कि उसे उस नई प्रेरणा की जरूरत थी। कुछ लोग बाइबल कक्षाएं पढ़ाने, आपात स्थितियों का जवाब देने और कई अन्य मंत्रालय गतिविधियों में इतने डूबे हुए थे कि वे अपने लक्ष्य से भटक गए थे। उन्हें यह समझने में मदद चाहिए थी कि उनकी सामान्य जिम्मेदारियां शिष्यत्व के लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं। यहाँ तक कि पूर्णकालिक मिशनरियों की दृष्टि भी दिनचर्या की तानाशाही से धुंधली हो सकती है। हम सभी को लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए बार-बार प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

मैं आपके शिष्य को प्रेरित करने के चार तरीके सुझाता हूँ।

1. दिशा।

अपने शिष्य का नेतृत्व करने के लिए आपको अपने जीवन में दिशा होनी चाहिए। पौलुस ने घोषणा की, "हालांकि, मैं अपने

जीवन को मेरे लिए कुछ भी मूल्यवान नहीं मानता, यदि मैं दौड़ पूरी कर सकूं और प्रभु यीशु द्वारा दिया गया कार्य पूरा कर सकूं..." (प्रेरितों के काम 20:24 एनआईवी)। मसीह के शिष्यों ने उन्हें यरूशलेम के लिए निकलते देखा, इस दृढ़ संकल्प के साथ कि वे मनुष्य के पापों के लिए मरेंगे (लूका 9:51)। यदि आप वचन के ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं और इसे दैनिक निर्णय लेने में लगातार लागू कर रहे हैं, तो आपका शिष्य भी ऐसा करने के लिए प्रेरित होगा।

2. दृष्टि।

अपने शिष्य की शिष्यत्व की दृष्टि को नियमित रूप से मजबूत करें। मसीह एक शिष्य थे। और लोग उनका कार्यक्रम थे। आपका शिष्य यह विश्वास करना चाहिए कि "जो कहता है कि वह [मसीह] में रहता है, उसे उसी तरह चलेना चाहिए जैसे वह चला" (1 यूहन्ना 2:6)। अपने शिष्य को दिखाएं कि पौलुस द्वारा थिस्सलुनीकियों के प्रशिक्षण ने न केवल मकदूनिया और अखाया में, बल्कि हर उस स्थान पर भी उनकी प्रभावी सेवा का परिणाम दिया जहाँ वे गए (1 थिस्सलुनीकियों 1:7,8)। अपने शिष्य को याद दिलाएं कि दूसरों में समय और ऊर्जा का उसका महंगा निवेश भी प्रचुर और स्थायी फल देगा। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति एक व्यक्ति की विस्फोटक क्षमता को नजरअंदाज नहीं करता। आदम के माध्यम से हम सभी पाप में जन्मे, लेकिन मसीह के माध्यम से हमारे पास नए जीवन की संभावना है (1 कुरिन्थियों 15:22)। अपने शिष्य की मदद करें कि वह शिष्य बनाने के लक्ष्य पर नजर बनाए रखे। "जहाँ दर्शन नहीं होता, लोग नष्ट हो जाते हैं..." (नीतिवचन 29:18 KJV)।

3. आत्मविश्वास. एक आत्मविश्वासी व्यक्ति स्थिर होता है, दबाव में अडिग, क्योंकि वह एक अपरिवर्तनीय और सुसंगत परमेश्वर में विश्राम करता है। अपने शिष्य को मसीह में उसका विश्वास पाने में मदद करें। जब प्रेरित मिर्गी के रोगी लड़के को ठीक करने में असमर्थ थे, तो उनका शरीर में विश्वास टूट गया और वे मसीह की ओर मुड़े (मार्क 9)। अपने शिष्य को ऐसी परिस्थितियों से न बचाएं जिनमें वह अपनी अक्षमता देख सके। उसे ऐसी जिम्मेदारियां दें जो उसे भगवान पर भरोसा करने के लिए मजबूर करें। उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा जब वह देखेगा कि भगवान उसके विश्वास का सम्मान करते हैं। यदि आपका शिष्य जीवित मसीह की उपस्थिति और कार्य को अपने जीवन में जानता है, तो ईसाई परिपक्वता और सेवा अनिवार्य है। वही यीशु जिसने बीमारों को चंगा किया, पानी पर चला, मृतकों को जीवित किया और फिर मृत्यु पर विजय प्राप्त की, उसने वादा किया कि जो लोग उस पर विश्वास करते हैं वे और भी बड़े कार्य करेंगे (यूहन्ना 14:12)। कोई भी व्यक्ति यीशु के साथ चलने वाले से अधिक आत्मविश्वासी नहीं हो सकता।

4. तात्कालिकता।

एक शिष्य की मेल-मिलाप की सेवा तब और तात्कालिक हो जाती है जब वह यह पहचानता है कि परमेश्वर के उपहार को अस्वीकार करने से अनंत नरक होता है। यीशु चेतावनी देते हैं, "हमें उस व्यक्ति के कार्य करना चाहिए जिसने मुझे भेजा है, जब तक कि दिन हो; रात आ रही है, जब कोई मनुष्य काम नहीं कर सकता" (यूहन्ना 9:4)। दूसरों के प्रति करुणा और मसीह की निकट वापसी का ज्ञान तात्कालिकता की मांग करता है। फिर भी, यदि तात्कालिकता की भावना बहुत अधिक है, तो आपका शिष्य हतोत्साहित हो जाएगा, यह महसूस करते हुए कि इतनी जल्दी बहुत कुछ किया जाना है कि उसका योगदान महत्वहीन होगा। लोग लगातार दबाव के तहत खराब काम करते हैं। यीशु ने अपने शिष्यों से आग्रह किया कि वे किसी भी क्षण लौटेंगे—जबकि उन्हें पीढ़ियों के लिए अपनी चर्च बनाने की योजना बनाने का निर्देश दिया। उनकी वापसी से उत्पन्न तात्कालिकता ने उनके अनुयायियों में आलस्य और टालमटोल को रोका, जिन्होंने फिर शिष्यत्व के माध्यम से उनकी चर्च का निर्माण किया। आपको भी एक संतुलित तात्कालिकता की भावना पैदा करनी चाहिए जो आपके शिष्य को बिना निष्क्रियता के लिए निराश किए कार्य करने के लिए प्रेरित करे। एक मजबूत संबंध सफल शिष्यत्व से अलग नहीं किया जा सकता। यह आपको आपके शिष्य के आध्यात्मिक स्वास्थ्य की आवश्यक समझ प्रदान करता है और एक मंच प्रदान करता है जिससे आप उसे प्रजनन की ओर निर्देशित कर सकते हैं। यह उसे स्वीकार करने की सुरक्षा देता है और आपकी प्रतिक्रिया पर कार्य करने की प्रेरणा देता है। और यह अंततः दूसरों के नेतृत्व के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण है। ईसाई शिष्यत्व संबंधपरक है।

शिष्य की चेकलिस्ट – शिष्यत्व संबंधपरक है
मेरे शिष्य के साथ मेरा संबंध इस प्रकार है:
___Warmth – प्रेम और कोमलता का रवैया।
___Loyalty – एक निरंतर प्रतिबद्धता।
___Fairness – निष्पक्ष रहना।
___Maturity – परमेश्वर के साथ स्थिर, विश्वासयोग्य चलना।
___Availability – अधिकतम पहुंच।
___Patience – कर्म में विश्वास।
___Honesty – खुला संवाद।
___Motivation – एक प्रेरक इच्छा जो हमें हमारे उद्देश्य की ओर ले जाती है।

पृष्ठ 113-116

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123